॥ उपसंहार ॥

—:: उपसंहार ::—

हिन्दी साहित्य की लोकप्रिय विधा है – उपन्यास । अपने युग की अभिव्यक्ति उपन्यास में पाई जाती है । हिन्दी साहित्य में "प्रेमचंद" एक श्रेष्ठ उपन्यासकार हो गए है । जिनका उपन्यास साहित्य एक "माइलस्टोन" की तरह मार्गदर्शन करता है । प्रेमचंदोत्तर कालीन तथा बाद के उपन्यासकारों में गाँधीवादी और मानवतावादी दृष्टिकोन दिखाई देता है । अपने समय बदलते हुए परिवेश का, समाजजीवन का आधुनिक बदलते हुए विचारों का और प्रवृत्तियों का यथातथ्य चित्र खिंचने का सामर्थ्य श्री अनंत गोपाल शेवड़ेजी के उपन्यासों में पाया जाता है ।

श्री.अनंत गोपाल शेवड़े का जन्म सौंसर जिला छिंदवाड़ा (मध्यप्रदेश) में हुआ । उनकी जन्मतिथि 8 सितंबर 1911 है । उनका बचपन इस हिंदी भाषी प्रदेश में गुजर गया और म. गाँधीजी की श्रध्दा उन्हें बचपन में ही प्राप्त हो गई । उन्होंने एम.ए. (अंग्रेजी) में सुवर्ण पदक भी प्राप्त किया । बचपन से ही हिंदी की ओर रूचि होने के कारण मराठी मातृभाषी होते हुए भी हिन्दी में अपना लेखन किया । उनके साहित्य में विविधता पाई जाती है । उन्होंने ग्यारह उपन्यास, 3 कहानी-संग्रह, निबंध संग्रह, पत्रिकाएँ ऐसी अनेक विधाओं में रचना करके हिंदी साहित्य की सेवा की ।

प्रेमचंदोत्तर कालीन उपन्यास विधा में अनेक नए मोड़ आए । इस बदलाव में मनोवैज्ञानिक उपन्यास परंपरा का भी आगमन हुआ । पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक, फ्रायड़, एड़लर जुंग आदि ने मानव मन को लेकर जो सिध्दान्त प्रतिपादित किए उन्हें लेकर उपन्यास के पात्रों का भी मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया जाने लगा । इस मनोवैज्ञानिक पध्दति को लेकर लेखन करनेवाले लेखकों की परंपरा में, जैनेन्द्र, इलाचंद जोशी, अज्ञेय आदि लेखक आते है । इन सबके साथ ही श्री. शेवड़ेजी का स्थान भी महत्वपूर्ण रहा है । श्री.शेवड़ेजी ने

अपने उपन्यासों में मानव को उसके समस्त गुण-दोषों सहित चित्रित किया है । फ्रायड़, एड़लर जैसे मनोवैज्ञानिकों के सिध्दांतो का प्रतिपादन शेवड़ेजी ने उपन्यासों के पात्रों व्दारा किया गया है । शेवड़ेजी ने इस मनोवैानिक पध्दति को अपनाकर अपने उपन्यासों में एक नया परिवर्तन कर दिखाया मानव-मन एक गूढ़ पहेली है । इन मनोवैज्ञानिकों के सिध्दान्तों को उपयोग में लाकर शेवड़ेजी ने इस पहेली को सुलझाने का प्रयत्न किया है ।

शेवड़ेजी के ग्यारह उपन्यासों में से छः उपन्यास मनोवैज्ञानिक हैं -

1. मृगजल,	2. निशा-गीत	3. पूर्णिमा
4. मंगला	5. अधूरा सपना	6. इंद्रधनुष ।

इन छः उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक तत्वों का पूरी तरह से निर्वाह किया गया है, जिससे उपन्यास के कथानक में रोचकता, उत्कंठा आदि गुण आ गए है । भाषा शैली में भी मनोवैज्ञानिकता झलकती है । मनोविज्ञान व्दारा व्यक्ति मानस पर उन्होंने प्रकाश ड़ाला है । इससे पात्रों के मन के सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों का भी प्रदर्शन हो जाता हे । इस प्रदर्शन में पात्रों के कुछ गहनतम और असामाजिक, कुंठित दमित विषय वासनाओं का भी उद्घाटन होता है परंतु शेवड़ेजी स्पष्ट गाँधीवादी होने के कारण इन विषयों को नया परिवर्तित रूप देते हैं । सेक्स को गाँधीजी के पवित्र प्रकाश में देखने का उनका प्रयास रहा है । फ्रायड़ और गाँधी के दर्शनशास्त्र का अच्छा समन्वय उनके उपन्यासों में हुआ है । इस तरह गाँधीवादी दर्शन से प्रभावित होते हुए भी मनोवैज्ञानिक चित्रण करने में उन्हें कमाल की सफलता हासिल हुई है ।

इस मनोवैज्ञानिक चित्रण में शेवड़ेजी ने उपन्यासों के नारीजगत् का भावविश्व अत्यंत कोमलता से पेश किया है । नारी जीवन की विवशता, उनकी भावनाएँ, शेवड़ेजी ने अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित की हे । नारी जीवन की ओर उनका दृष्टिकोन

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

हमेशा आदरयुक्त रहा है । मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इन नायिकाओं के यौन भावनाओं मातृत्व भावनाओं का आंदोलन, उस समय के उनके मनोव्देगों को शेवड़ेजी ने यथार्थता से चित्रित किया है । यौन भावनाओं के उद्दाम आवेगों का चित्र कहीं भी अश्लीलता के रंगो से नहीं रंगाया हे । नारी को उन्होंने हमेशा आदर से देखा है । उसे मानव जगत् की समस्त गुणावगुणों सहित चित्रित किया है । उनकी धारणा ऐसी थी कि मातृ जाति का अपमान करने से मानव का कभी कल्याण नहीं होगा, नारी जाति की ओर सहानुभूति और स्नेह की दृष्टि से देखना चाहिए । उनकी यह मनोधारणा जगह जगह पर उपन्यासों के पात्रोंव्दारा दृष्टिगोचर होती है ।

यौवन के प्रांगण में विहार करनेवाली नायिकाओं के मन में उठनेवाली तरंगो को एक लहर के समान ही शेवड़ेजी ने सूक्ष्मता से चित्रित किया है । उनकी दमित, कुंठित इच्छाओं को व्यक्त करते हुए शेवड़ेजी ने कहीं भी उत्शृंखलता नहीं दिखाई । देव घर के नंदा-दीपों की तरह इन नायिकाओं का व्यक्तित्व संयमित, बनाया है । अगर कहीं चूकभूल से उनकी ज्योति वासना से प्रज्वलित हुई है तो उसे हृदय परिवर्तन मन परिवर्तन व्दारा शान्त किया हे । बिना परिस्थिति के कोई पाप नहीं करता, कहकर शेवड़ेजी ने उनकी गलती को क्षमा के योग्य बताया है ।

कुछ नायिकाएँ आदर्श की सीमारेखाओं को लाँघकर विद्रोह भावना से समाज के नीति-नियमों को झकझोर देती है । "मंगला", वीणा जेसी नारियाँ अपने दमित इच्छाओं की पूर्ति के लिए समाज के बंधनों को तोड़ डालती है । मगर शेवड़ेजी भारतीय संस्कृति की हिमायत करनेवाले होने के कारण यह नारियाँ हृदय-परिवर्तन व्दारा बच जाती है । भारतीय संस्कृति का पालन करनेवाली नायिका के रूप में सुशीला को चित्रित किया है । मधुसूदन जैसा आदर्श योग्य व्यक्ति अगर दूसरी कोई स्त्री से प्रेमयाचना करता तो कोई भी स्त्री उसे इन्कार नहीं कर सकती, मगर सुशीला में विद्रोह करने की कमी होने के कारण वह इस प्रेमयाचना को अपना

मन मसोसकर इन्कार कर देती है । आदर्श भारतीय स्त्री होने के कारण वह फिर. मधुसूदन की विपदावस्था में उसे साथ देती है । इसीतरह "मृगजल" की मरियम - एक ईसाई स्त्री होते हुए भी -भारतीय संस्कृती से प्रभावित दिखाई देती है । गांधर्व पध्दति से विवाहित अपने पति अशोक ठाकुर के प्रति मरियम हमेशा एकनिष्ठ रहती है । परंतु वीणा जैसी स्त्री अपनी स्वाभाविक इच्छा, (माँ बनने की) के कारण अपने पति से प्रतारणा करती है परंतु अपनी गलती जानकर पछताती है और पुनः अपने पति से क्षमा प्राप्त कर अपना जीवन बिताती है । पूर्णिमा, सुहासिनी जैसी स्त्रियाँ आधुनिक रमणियाँ है जिनपर सुसंस्कारिता के साथ ही साथ पाश्चात्य प्रभाव भी दिखाई देता है अपने "अहं" को स्थिर रखने के लिए वह कभी भी समझौता करने के लिए तैयार नहीं है बल्कि अपना सारा जीवन भी, अपने "अहं" को टिकाने के लिए धोखे में ड़ालती हुई नजर आती है । फिर भी विनयकुमार जैसे आदर्श चरित्र उन्हें अपनाकर इन नायिकाओं के दूभर होनेवाले जीवन को बचाते है ।

शेवड़ेजी नारी को एक श्रध्दामयी, प्रेरणादायी देवी के रूप में देखते हैं । श्रध्दा के कारण मनुष्य के जीवन को अर्थ प्रापत होता है और इसी श्रध्दा से संस्कृति का सृजन होता है । श्रध्दावान मनुष्य सुसंस्कृत बन जाता है । इस प्रकार का नारी विषयक दृष्टिकोन शेवड़ेजी के उपन्यासों व्दारा प्राप्त होता है ।

शेवड़ेजी बहुमुखी साहित्यकार है । अपने उपन्यासों में विविधता के साथ ही मनोवैज्ञानिक चित्रण यथार्थता से करने में वे सफल हुए है । यह मनोवैज्ञानिक चित्रण अत्यंत संयम के साथ ही भारतीय संस्कृति की हिमायत करनेवाला है यही प्रतित होता है ।

उपलब्धियाँ -

1. शेवड़ेजी मनोवैज्ञानिक उपन्यास लेखक के रूप में एक सफल लेखक रहे हैं । उन्होंने जों ग्यारह उपन्यास लिखे हैं उनमें से प्रस्तुत छः उपन्यास मनोवैज्ञानिक

है और उनकी नायिकाओं के मनोव्यापार को शेवड़े जी ने सफलता से व्यक्त किया है ।

2. शेवड़ेजी ने यह चित्रण करते वक्त मंगला, वीणा, जैसी नारियों की विद्रोह भावना तथा उनकी आजादी का ऐलानः तो किया किंतु अपने साहित्य का बुरा असर न पड़े, लोकमंगल की भावना कायम रहे इसलिए इन नायिकाओं को हृदय परिवर्तन व्दारा ऊपर उठाया है ।

3. शेवड़ेजी ने अपने उपन्यासों के पात्रों का सही सही चित्रण किया है । उनके उपन्यासों के पात्र जीवन के सभी अरमान लेकर जीते हैं, उनकी पूर्ति के लिए गलतियाँ भी करते हैं जिससे इन पात्रों की सजीवता तथा उपन्यास "जीवन का प्रतिबिंब है" की पूर्तता करते हुए दिखाई देते हैं ।

4. शेवड़ेजी के इन उपन्यासों में से कुछ नारियाँ आदर्श भारतीय परंपरा की राह पर चलती है जैसे नर्स सुशीला, मरियम, सुहासिनी आदि । लेकिन कहीं कहीं इस आदर्शवादिता की कल्पना में ये नारियाँ वास्तवता का साथ छोड़ती हुई दिखाई देती हैं । स्वयं दुःखों को सहती जाती है । मोम की तरह स्वयं पिघलती रहती है लेकिन अंधेरे में प्रकाश-किरणें फैलाती रहती हैं ।

शेवड़ेजी के उपन्यासों एवं साहित्य पर और भी अध्ययन की जरूरी है । एक अहिंदी भाषी लेखक की हिंदी साहित्य की यह सेवा स्तुत्य है ।

अध्ययन की नई दिशाएँ -

1. "शेवड़ेजी के उपन्यासों में चित्रित नारी समस्याएँ" ।

2. "शेवड़ेजी के उपन्यासों पर गाँधीवादी दर्शन का प्रभाव" ।

—==::: आधार-ग्रंथ सूची !!:==—

1. शेवड़े अनंत गोपाल — " मृगजल " — आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली-6, दूसरा संस्करण, 1962 ई.।
2. शेवड़े अनंत गोपाल — " निशागीत " — "रंजन प्रकाशन," बाँके-विलास, सिटी स्टेशन मार्ग, आगरा ग्यारहवाँ संस्करण, 1987 ई.।
3. शेवड़े अनंत गोपाल — " पूर्णिमा " — साहित्य रत्नाकर, ग्वालियर
4. शेवड़े अनंत गोपाल — " मंगला " — विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, तृतीय संस्करण, 1986 ई.।
5. शेवड़े अनंत गोपाल — " अधूरा सपना " — हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली ।
6. शेवड़े अनंत गोपाल — " इंद्रधनुष " — वोरा ॲन्ड कंपनी, पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद-1, द्वितीय संस्करण 1969 ई.।

(ब)

—==::: संदर्भ ग्रंथ सूची :::==—

1.	डॉ. उपाध्याय देवराज	"आधुनिक हिंदी कथा साहित्य और मनोविज्ञान"	साहित्य भवन, प्राईवेट लिमिटेड, इलाहाबाद प्र.सं. 1956 ई.।
2.	डॉ. गुंजीकर शं.ना.	"अनंत गोपाल शेवडे और उनका साहित्य"	विद्याविहार कानपुर, प्रथम संस्करण 1986 ई.।
3.	धवन सुषमा	"हिंदी उपन्यास	राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1956 ई.।
4.	संपा. भटनागर बाँकेबिहारी	"शेवडे : व्यक्तित्त्व, विचार और कृति"	आत्माराम एण्ड संस दिल्ली-6 प्रथम संस्करण 1966 ई.।
5.	मदान इंद्रनाथ	"हिंदी उपन्यास : पहचान और परख"	लिपि प्रकाशन ई 10/4, कृष्णनगर, प्रथम संस्करण, 1973 ई.।
6.	मानधाने धनराज	"हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास"	ग्रंथम् रामबाग, कानपुर, 1971 ई.।
7.	मिश्र रामदरश	"हिंदी उपन्यास के सौ वर्ष"	गिरनार प्रकाशन, महेसाना (उ.गुजराथ) प्रथम संस्करण ।
8.	वार्ष्णेय लक्ष्मीसागर	"हिंदी साहित्य का इतिहास"	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
9.	संपा. शर्मा हरिवंशलाल	"हिंदी साहित्य का बृहद् इतिहास" (चतुर्दश भाग)	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी प्रथम संस्करण ।
10.	सहस्त्रबुध्दे विमल	"हिंदी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण"	पुस्तक संस्थान, कानपुर 1974 ई.।

—0—

परिशिष्ट 1

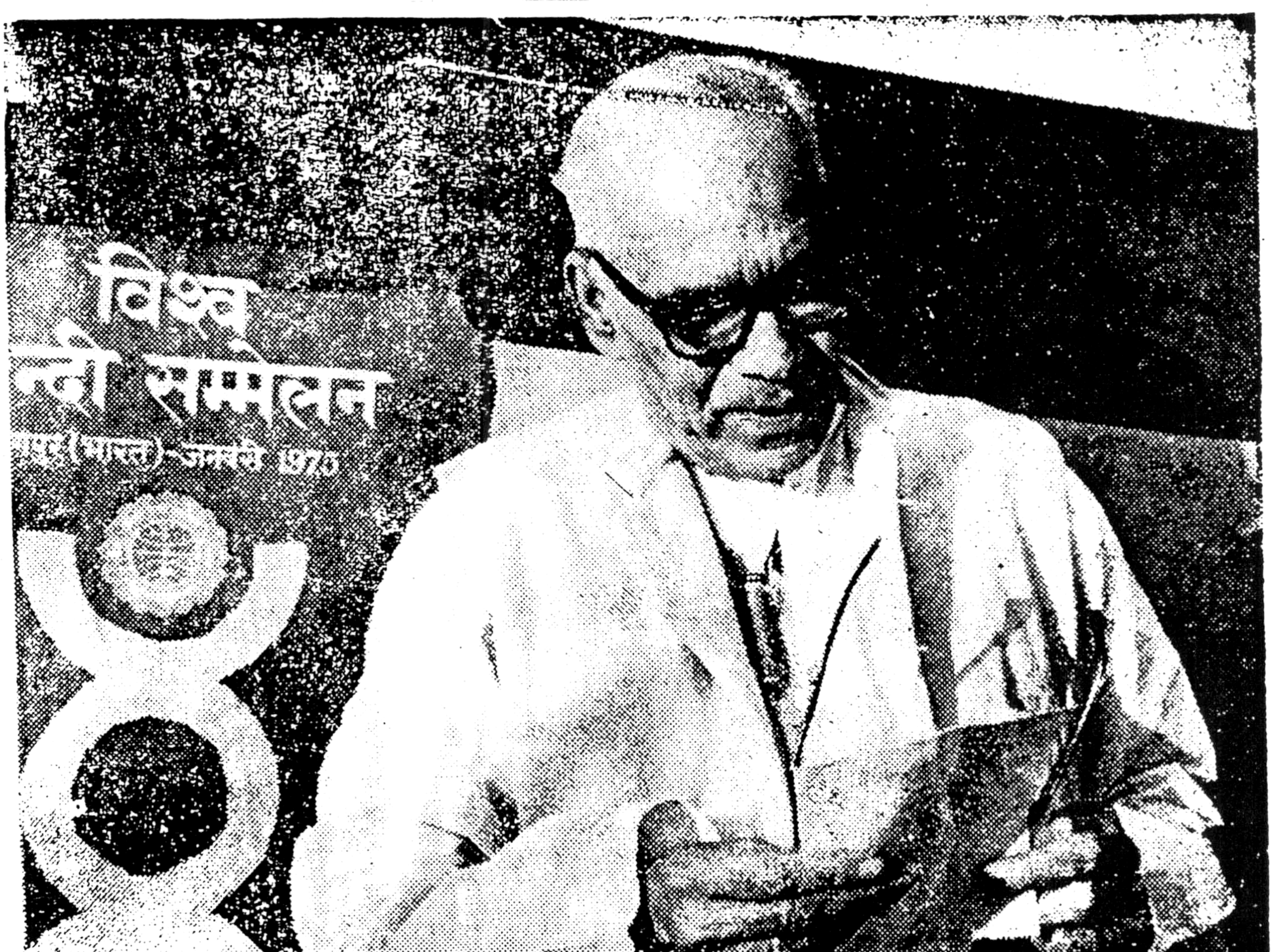

विश्व हिन्दी सम्मेलन नागपूर, भारत 1975 के महासचिव के रूप में श्री· अनंत गोपाल शेवड़े ।

" विनोबाजी भावे के साथ "

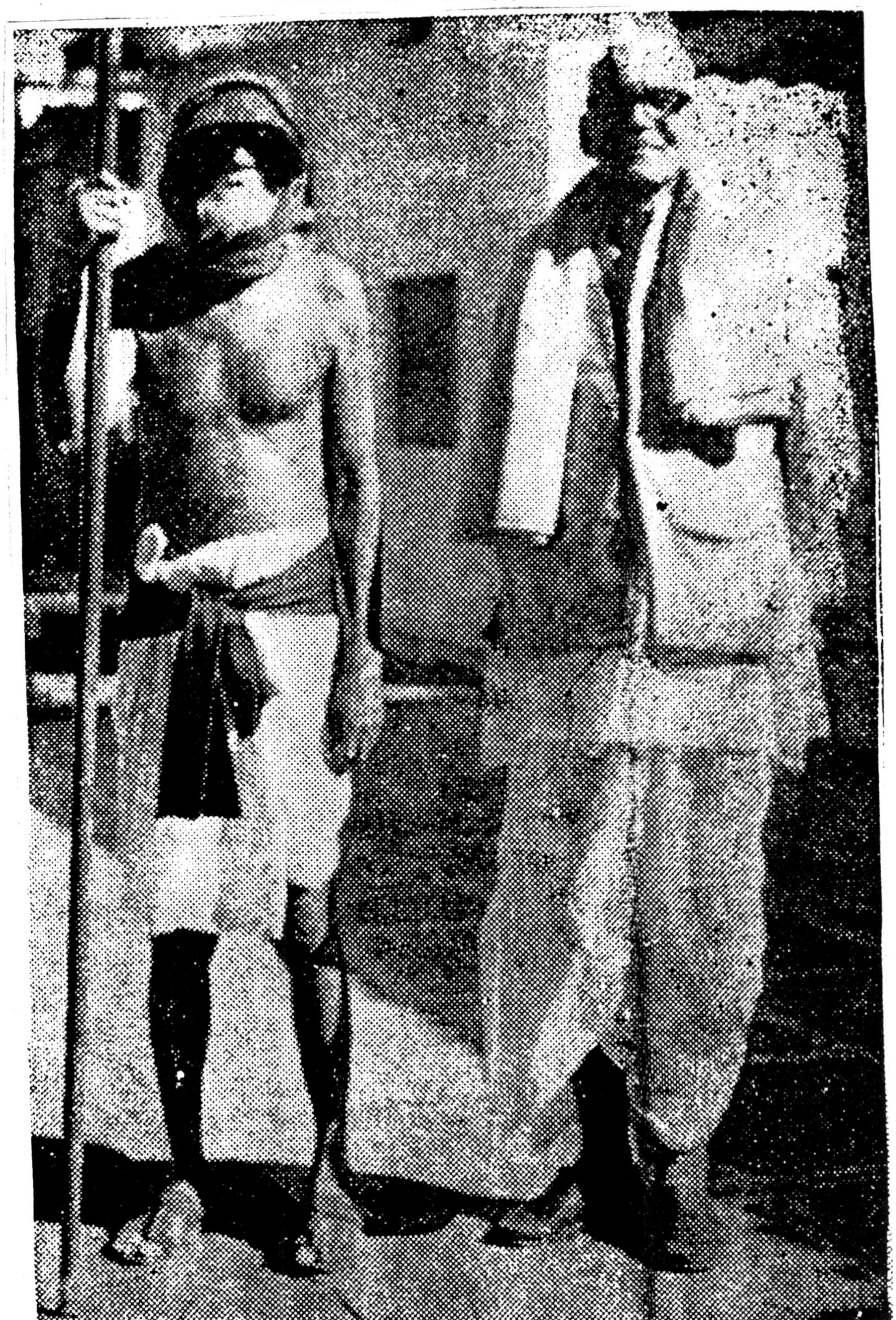

स्पष्ट गांधीवादी शेवड़े अपनी
पत्रिका – नागपुर पत्रिका – गांधीजी को
समर्पित करते हुए –

श्रीमती यमुना शेवड़े – मराठी साहित्य की, प्रसिध्द, उपन्यास तथा कथा लेखिका, नागपुर पत्रिका की प्रमुख प्रबंध संपादिका और संचालिका ।

शेवड़े दम्पत्ति